जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

जैन धर्म कोई मत या सम्प्रदाय नहीं है, वह तो वस्तु का स्वरूप है, वह एक तथ्य है, परम सत्य है।

- बिन्दु में सिन्धु, पृष्ठ - 7

वर्ष : 26, अंक : 8 | **सम्पादक :** पण्डित रतनचन्द भारिल्ल | आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जुलाई (द्वितीय) 2003 | **प्रबन्ध सम्पादक :** पण्डित संजीवकुमार गोधा | वार्षिक शुल्क : 25/-, एकप्रति : 2/-

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर सम्पन्न

पिड़ावा (राज.) : यहाँ कुन्दकुन्द प्रवचन प्रसारण संस्थान उज्जैन द्वारा दिनांक 5 जून से 11 जून 2003 तक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित विमलचन्दजी झांझरी, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी, पण्डित शांतिलालजी सौगाणी एवं पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

शिविर में आयोजित विधान पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा, पण्डित मनीषजी शास्त्री एवं पण्डित चेतनजी नलखेड़ा के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

- चिन्मय शास्त्री

हरिवंश कथा के संबंध में - अभिमत

हरिवंश कथा पुस्तक सरल-सुगम आधुनिक शैली में होने पर भी प्राचीन पद्धति से आकर्षक साज-सज्जा के साथ प्रकाशित हुई है; जिससे पुस्तक पढ़ते समय पुराण-कथा पढ़ने का अहसास बनता है, क्योंकि हमारी श्रद्धा पुराणों को इसी शैली में पढ़ने की है।

हरिवंश कथा का मुख्यत: सम्बन्ध भगवान नेमिनाथ, श्री कृष्ण तथा कौरव-पाण्डवों से है। मूलकथा के साथ-साथ अन्य अकंपनाचार्य आदि 700 मुनियों और मुनि विष्णुकुमार की कथा, सुभौम चक्रवर्ती की कथा आदि से इस मुख्य कथा का महत्व और भी बढ़ गया है। बीच-बीच में प्रयुक्त कोटेशन आदि भी मार्मिक तथा प्रसंगोपयोगी हैं।

विद्वान लेखक आदरणीय पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल मङ्गलायतन के साथ प्रारम्भ से ही जुड़े रहे हैं। आपकी आत्मीयता से मैं भाव-विभोर हूँ। मैं आपके दीर्घायु जीवन की मङ्गल कामना करता हूँ।

- पवन जैन, मङ्गलायतन, अलीगढ़

छब्बीसवाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर

रविवार, 27 जुलाई से मंगलवार, 5 अगस्त 2003 तक

यह सूचित करते हुये अत्यन्त हर्ष हो रहा है कि आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से संस्थापित श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट मुम्बई द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी राजस्थान की राजधानी जयपुर स्थित ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में रविवार, 27 जुलाई से मंगलवार 5 अगस्त 2003 तक 26वें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का आयोजन अनेक मांगलिक कार्यक्रमों सहित किया जा रहा है।

शिविर में अध्यात्म जगत के प्रसिद्ध प्रवक्ता बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा, तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी, पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. यशपालजी जैन बेलगाँव, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित राकेशकुमारजी शास्त्री नागपुर, पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, पण्डित शैलेषभाई तलोद, डॉ. कपूरचन्दजी 'कौशल' भोपाल, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर आदि विद्वानों के प्रवचन, कक्षाओं एवं तत्त्वचर्चा के माध्यम से लाभ मिलेगा। साथ ही व्याख्यानमाला के माध्यम से अनेक विशिष्ट विद्वानों द्वारा विविध विषयों के व्याख्यानों का लाभ भी प्राप्त होगा।

शिविर के सम्पूर्ण कार्यक्रम बाल ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर एवं श्री अमृतभाई मेहता फतेपुर के कुशल निर्देशन में सम्पन्न होंगे।

ऐसे मांगलिक अवसर पर सपरिवार, इष्ट मित्रों सहित पधारकर धर्मलाभ लेने हेतु हमारा वात्सल्यपूर्ण हार्दिक आमंत्रण है।

सम्पादकीय –

हरिवंश कथा

(गतांक से आगे .....)

– रतनचन्द भारिल्ल

इसप्रकार चारुदत्त ने यदुवंशी वसुदेव से कहा ह्न कि हे यादव ! विद्याधर कुमारी गंधर्वसेना का मेरे साथ जो पवित्र सम्बन्ध है तथा इस वैभव की मुझे जो प्राप्ति हुई है ह्न यह सब वृतान्त मैंने आपसे कहा।

हे यदुनन्दन वसुदेव ! यह कन्या आपके लिए ही रखी गई थी, तथा इस भाग्यशालिनी कन्या ने आपको ही प्राप्त कर लिया है। इसे स्वीकार कर आपने मुझे कृत्यकृत्य कर दिया।

विशिष्ट ज्ञानी तपस्वियों ने बताया है कि मेरा मोक्ष निकट है और तपधारण करने से इस भव के बाद मुझे स्वर्ग प्राप्त होगा; इसलिए अब मैं निश्चिंत होकर तप ही धारण करूँगा। इसप्रकार वसुदेव चारुदत्त की उत्साहपूर्ण वार्ता सुनकर एवं गन्धर्वसेना के पवित्र सम्बन्ध को जानकर बहुत सन्तुष्ट हुए। और चारुदत्त की प्रशंसा करते हुए बोले ह्न अहो ! आपका स्वभाव अत्यधिक उदार है, आपका असाधारण पुण्य प्रताप भी प्रशंसनीय है। बिना भली होनहार के एवं सही तत्त्वज्ञान के बिना ऐसा पौरूष और साहस संभव नहीं है। अन्य साधारण की तो बात ही क्या है, देव तथा विद्याधर भी ऐसे वैभव को प्राप्त नहीं कर सकते।

चारुदत्त का वृत्तान्त सुनकर वसुदेव ने चारुदत्त के लिए गन्धर्वसेना आदि की प्राप्ति तक का अपना वृतान्त कह सुनाया।

इसप्रकार आपस में एक-दूसरे के स्वरूप को जाननेवाले तथा त्रिवर्ग के अनुभव से प्रसन्न चारुदत्त आदि सुख से रहने लगे। चारुदत्त के जीवन का उतार-चढ़ाव एवं विचित्र घटनाओं को लक्ष्य में लेकर आचार्य कहते हैं कि ह्न हे राजन् ! हे वसुदेव ! धर्मात्मा मनुष्य भले ही पूर्व क्षणिक पापोदय के कारण कुछ काल के लिए निर्धन हो गया हो, समुद्र में गिर गया हो, कुएँ में भी उतर गया हो, किसी भी कठिनाई में पड़ गया हो ह्न तो भी पापक्षीण होने पर धर्म के प्रभाव से पुनः सर्वप्रकार से सम्पूर्ण सुख के साधनों से सम्पन्न हो जाता है। इसलिए हे भव्यजन ! जिनेन्द्रदेव के द्वारा प्रतिपादित धर्म चिन्तामणि रत्न का शतत् संचय करो।

हरिवंश कथा के अध्ययन से, नाना पात्रों के परिचय से।
चित्र-विचित्र चरित्रों से, पापों के प्रचुर प्रसंगों से।
दुखमय जीवन को देख-देख, यह सहज समझ में आता है कि –
जीव नाना कर्म नाना लब्धि नाना विधि अरे !
बस इसलिये ही स्वपर सह विसंवाद परिहर्तव्य रे ।

– रतनचन्द भारिल्ल

हरिवंश कथा : मेरी दृष्टि में -

प्रस्तुत कृति बींसवी शताब्दी के प्रखर मनीषी विद्वान पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल की है। उनका यह कार्य आचार्य जिनसेन द्वारा रचित हरिवंशपुराण की विशालता को सरल-सुबोध शैली में संक्षिप्त एवं सारगर्भित बनाने का अनुपम प्रयास है।

'हरिवंश कथा' शीर्षक को देखकर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो यह कोई कथा-कहानी मात्र होगी; किन्तु जब इसे पड़ा तो इसमें निरूपित वस्तु-स्वतंत्रता, पाँच समवाय, छहद्रव्य, सामान्यगुण, सात तत्त्व आदि की चर्चा को देखकर अवाक् रह गया।

प्रथमानुयोग का ग्रन्थ होते हुए भी इसमें प्रसंगानुसार पात्रों को मोक्षमार्ग में लगाने के लिए मुनिराजों एवं गणधरों द्वारा वैराग्यप्रेरक, सैद्धान्तिक एवं आध्यात्मिक उपदेश दिया गया है, वह अपने आप में अद्भुत है।

प्रस्तुत कृति में 22 वें तीर्थंकर नेमिनाथ, श्रीकृष्ण के पिता वसुदेव, श्रीकृष्ण तथा उनके पुत्र प्रद्युम्नकुमार, भानुकुमार, शंभुकुमार के साथ-साथ कौरवों पाण्डवों के प्रेरणादायक प्रसंगों का जीवन्त चित्रण किया गया है।

श्रीकृष्ण की मृत्यु के पश्चात् बलदेव का करुण विलाप पड़कर अपनी अश्रुधारा को रोकना कठिन लगता है। जहाँ नेमिनाथ के वैराग्य का प्रसंग हृदय में संसार, शरीर एवं भोगों से उदासीनता दिलाता है, वहीं राजुल का आदर्श जीवन, उसका वैराग्य एवं सतीत्व भी हृदय पर अमिट छाप छोड़ता है।

प्रस्तुत कृति में लेखक की आत्मविशुद्धि की भावना तो प्रमुख रही ही है साथ अनेक स्थानों पर नैतिक एवं सदाचार प्रेरक प्रसंगों से जनकल्याण एवं समाज सुधार की भावना भी मुखरित होती है, जो सामान्य पाठक के जीवन को बदलने में समर्थ है।

लेखक द्वारा इसे इसतरह से अपनी लेखनी द्वारा बांधा गया है कि इसे पढ़नेवाला कैसे भी क्षयोपशमवाला हो; अवश्य ही लाभान्वित होगा।

मैं आशा करता हूँ कि लेखक की यह कृति भी अन्य कृतियों के समान ही लोकप्रिय होकर जैनदर्शन एवं भारतीय दर्शनों के आदर्शों को जन सामान्य के सामने प्रस्तुत करने में मील का पत्थर साबित होगी।

प्रकाशक	: पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर
पृष्ठ	: 300 (पक्की जिल्द)
मूल्य	: 30/- रुपये मात्र
प्राप्ति स्थान	: पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर।

– संजीवकुमार गोधा, प्रबन्ध सम्पादक

कहान-संदेश

धर्मी की मंगल भावना

17

अहो ! यह आत्मतत्त्व तो गहन है ; बाह्य पंचेन्द्रियों के व्यापार को रोककर मन के संबन्ध से विचार करे कि अहो ! यह आत्मवस्तु अचिंत्य है, ज्ञायक ...ज्ञायक ...ज्ञायक ही है – ऐसा विकल्प से निर्णय करना भी परोक्ष निर्णय है अर्थात् अभी प्रत्यक्ष स्वानुभव नहीं हुआ है ; इसलिए उसे परोक्ष कहा है। प्रथम मन के बाहर का बोझ बहुत कम कर दे, तब मन के भीतर के विचारों में लगता है , फिर वहाँ से भी हटकर अंतरस्वभावोन्मुख होकर उसकी महिमा में लीन होने पर आनन्द का अनुभव होना ही सम्यग्दर्शन है।

अहा ! चैतन्यप्रभु समीप ही विराज रहा है, उसपर दृष्टि न होने से और पर्याय पर दृष्टि होने से चैतन्यप्रभु प्रगट नहीं होता। भले ही पर्याय में ज्ञातृत्व का विशेष विकास हुआ है और व्यवहार श्रद्धा आदि पर्याय में हुए हैं; परन्तु उस पर्याय के ऊपर दृष्टि रखने से चैतन्यप्रभु के दर्शन नहीं होते। ज्ञान की पर्याय में शास्त्रज्ञान का विकास हुआ है, उसका भी लक्ष्य छोड़ दे ! वह ज्ञान कहीं आत्मा का ज्ञान नहीं है। परसत्तावलम्बी ज्ञान में जिसे उत्साह आता है, वह ज्ञेयनिमग्न है, उसे ज्ञानस्वरूप में लीनता नहीं होगी। जिन्हें योग्यता का अभिमान है, वे सब ज्ञेयनिमग्न हैं, ज्ञाननिमग्न नहीं। ये तो भव से छुटकारे की अपूर्व बातें हैं।

प्रभु ! ज्ञायकभाव में दृष्टि को स्थापित करो ! द्रव्य में अनन्त सामर्थ्य भरा है, वहाँ दृष्टि को लगाओ ! निगोद से लेकर केवलज्ञान और सिद्धदशा तक की कोई पर्याय शुद्धदृष्टि का विषय नहीं है। शुद्धदृष्टि का विषय तो द्रव्यसामान्य है, वहाँ अपनी दृष्टि को लगा – स्थिर कर ! दृष्टि को द्रव्य में ही स्थिर कर देने पर आगे बढ़ा जाता है।

अपने पीछे कोई विकराल सिंह झपट्टे मारता चला आ रहा हो तो स्वयं कैसी दौड़ लगायेगा ! क्या वहाँ आराम लेने को खड़ा रहेगा ? वैसे ही यह कराले काल झपटने के लिए तैयार खड़ा है; इसलिए अंतर में अभी कार्य बहुत बाकी है – ऐसा लगना चाहिए।

शुभाशुभ परिणाम उनके काल में जो होनेयोग्य हों वही होते हैं; लेकिन जो नहीं होने थे उसे करे और जो होने थे उसे टाल दे, यह दृष्टि मिथ्यादृष्टि है। राग भी अपने स्वकाल में ही होता है – ऐसी दृष्टि ही ज्ञायक का अनन्त पुरुषार्थ है।

प्रश्न :पर्याय तो व्यवस्थित ही होना है, अत: पुरुषार्थ की पर्याय तो जब प्रगट होने का काल आयेगा तब प्रगटेगी, तब उसे करना क्या रहा ?

उत्तर : भाई ! पर्याय में कुछ नहीं करना है; बल्कि पर्यायें जिस द्रव्य में उत्पन्न होती है, उस द्रव्यसामान्य पर दृष्टि करना है। सामान्य पर द्रष्टि देने में अनन्त पुरुषार्थ आ जाता है।

मैं पूर्णानन्द का स्वामी ज्ञायक प्रभु हूँ – ऐसे ज्ञायक के लक्ष्य से जो जीव श्रवण करता है, सुनते हुए लक्ष्य ज्ञायक का रहता है, मैं परिपूर्ण ज्ञायक वस्तु हूँ – ऐसा चिन्तन होता रहता है, उस जीव को भले ही अभी सम्यग्दर्शन नहीं हुआ हो; तथापि वह सम्यक्त्व के सन्मुख है। उस जीव को ऐसी लगन लगती है कि मैं तो जगत का साक्षी हूँ, ज्ञायक हूँ। ऐसे दृढ़ संस्कार अंतर में डालता है कि जो पलट नहीं सकते। जिसप्रकार सम्यग्दर्शन होने पर अप्रतिहतभाव कहा है; उसीप्रकार सम्यक्त्व सन्मुखता के ऐसे बीज पड़ते हैं कि अब उसे सम्यग्दर्शन होकर ही रहेगा। जैसे समयसार गाथा 4 में कहा है कि मिथ्यात्व का एकक्षत्र शासन चल रहा है, वैसे ही ज्ञायक का एकक्षत्र लक्ष्य आना चाहिए । यदि उपयोग एकमात्र ज्ञान में स्थिर न रह सके तो द्रव्य–गुण–पर्याय के विचार में बदल दे, उपयोग को सूक्ष्म करे, सूक्ष्म करते करते ज्ञायक के बल से आगे बढ़े वह जीव क्रमश: सम्यग्दर्शन प्राप्त करता है।

सर्वज्ञ का निर्णय करने जाये, आदर करने जाये, विश्वास करने जाये, प्रशंसा करने जाये, रुचि करने जाये, वहीं अपने सर्वज्ञ स्वभाव का निर्णय हो जाता है। उसी में पुरुषार्थ आ गया।

श्री प्रवचनसार की 80वीं गाथा में कहा है कि जो अरिहंत के द्रव्य–गुण–पर्याय को जानता है वह अपने आत्मा को जानता है और श्री समयसार की पहली गाथा में कहा है कि जो अनंत सिद्धों–सर्वज्ञों को अपने में स्थापित करके अपने आत्मा को जानता है वह अल्पकाल में सम्यक्त्व प्राप्त करके केवली होता है । अहाहा ! अद्‌भुत बात कही है। जिसने एक समय की पर्याय में अनन्त सिद्धों को–सर्वज्ञों को स्थापित किया है, जाना है, आदर किया है, उसका लक्ष राग से हटकर ज्ञानस्वभाव के सन्मुख ही जाता है, ऐसे श्रोता के आत्मा में अनंत सिद्धों को स्थापित करता हूँ – ऐसा कहा है।

अहाहा ! जिसने एक समय की अल्पज्ञ पर्याय में अनन्त सिद्धों की स्थापना की है, उसने स्वयं को राग से तथा संसार से भिन्न कर लिया है। जो पर्याय अनन्त सिद्धों को पी गई – जान गई वह पर्याय द्रव्य को क्यों नहीं जानेगी ? जो पर्याय अनन्त सिद्धों को स्थापित करती है– जानती है, वह द्रव्य में अवश्य ही ढल जाती है तथा अपने द्रव्य को जानती ही है और सम्यग्दर्शन–ज्ञान–चारित्र होते ही हैं ।

भाई ! तेरा आत्मा तेरी पर्याय के समीप ही है, उसे तू देख ! अपनी पर्याय में अनन्त सिद्धों की स्थापना कर तो तुझे अपनी पर्याय की शक्ति का ख्याल आयेगा कि उसमें कितनी शक्ति है। जो श्रोता अपनी पर्याय में सिद्धों का स्थापन करके सुनते हैं, पढ़ते हैं, विचारते हैं, वे उसी में उसी का पोषण अर्थात् पुष्टि करते–करते अल्पकाल में सिद्ध हो ही जाते हैं।

(क्रमशः)

पुरस्कारों के लिये नाम आमंत्रित

भगवान महावीर फाउण्डेशन ने 2003 के अवार्ड चयन के नामांकन आमंत्रित करने के लिए प्रेस विज्ञप्ति जारी की है। इस संस्थान के प्रबन्ध न्यासी श्री सुगालचन्दजी ने बताया कि प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी महावीर फाउण्डेशन तीन पुरस्कार प्रदान करेगा। प्रत्येक पुरस्कार की राशि पाँच लाख रूपये नकद, प्रशस्ति पत्र एवं भगवान महावीर की प्रतिमा स्मृति चिन्ह स्वरूप प्रदान की जायेगी। पुरस्कार निम्नांकित तीन क्षेत्रों में उत्कृष्ट कार्यों के लिए दिये जायेंगे।

1. अहिंसा एवं शाकाहार का प्रचार-प्रसार
2. शिक्षा एवं चिकित्सा
3. सामाजिक एवं सामुदायिक सेवा

पुरस्कारों के लिए नामांकन 15-8-2003 के पूर्व फाउण्डेशन कार्यालय में पहुँच जाने चाहिए। स्व नामांकन स्वीकार नहीं किये जायेंगे। श्री जैन ने आगे बताया कि पुरस्कार निर्णायक समिति में भारत के गणमान्य महानुभाव हैं। उच्चतम न्यायालय के भूतपूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति श्री एम. एन. वेंकटचेल्लैया इस समिति के अध्यक्ष हैं।

इस संस्थान का लक्ष्य है कि केवल भारतीय नागरिक एवं संस्थाएं जो कि भारत में स्थित हैं और देश में उत्कृष्ट कार्य कर रहीं हैं, इन पुरस्कारों की पात्र होंगी। साधारणतया हाल में किये गये कार्य ही पुरस्कारों के लिए विचारणीय होंगे। पुरस्कार निर्धारण मुख्यरूप से इस बात पर निर्भर करेगा कि इनके प्रयासों से आर्थिक एवं सामाजिक रूप से पिछड़े वर्गों जैसे अनुसूचित जाति/ अनुसूचित जनजाति तथा महिलाओं को कितना लाभ पहुँच रहा है।

– सुगालचन्द जैन

11, ponnappa Lane, Triplicane, Chennai - 600005

जयपुर में धर्म प्रभावना

पण्डित राजेशकुमारजी शास्त्री शाहगढ़ द्वारा ग्रीष्मकाल में जयपुर के विभिन्न उपनगरों में धर्मप्रभावना की गई।

आपने **आदर्श नगर जैनमंदिर** में दिनांक 11 मई से 29 जून तक, **जनता कॉलोनी जैन मंदिर** में 1 जून से 29 जून तक, **श्री दिग. जैन मंदिर मालवीय नगर** में 1 जून से 15 जून तक, **महावीर नगर (विष्णुपुरी)** में 5 जून से 29 जून तक बाल कक्षाओं का सघन अभियान चलाया।

इस अभियान से जयपुर महानगर में सैकड़ों साधर्मी भाई-बहिन तथा बच्चे लाभान्वित हुये। प्रत्येक स्थान पर समापन के अवसर पर परीक्षा का आयोजन किया गया एवं पुरस्कार वितरित किये गये।

बाल शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर : यहाँ श्री महावीर दिगम्बर जैन सीनियर हा.सै. स्कूल, सी-स्कीम में कक्षा 6 से 8 के बालकों को नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा देने हेतु श्रीमती कौशल्यादेवी जैन मैमोरियल मोरल एज्यूकेशन फण्ड के सौजन्य से दिनांक 2 जुलाई से 8 जुलाई 2003 तक एक बाल शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर का उद्घाटन 2 जुलाई को स्कूल प्रांगण में पूर्व मुख्य सचिव श्री एम. एल. मेहता ने किया।

शिविर में पण्डित प्रवीणकुमारजी शास्त्री, पण्डित अमोलजी संघई, पण्डित परेशजी शास्त्री, पण्डित संतोषजी मिन्चे, पण्डित विशाल सर्राफ एवं पण्डित अभिषेक सिलवानी द्वारा वीतराग-विज्ञान भाग-1, 2 व 3 के माध्यम से बालकों को नैतिक जीवन का ज्ञान कराया गया।

शिविर में शिक्षण कक्षाओं के पूर्व प्रतिदिन क्रमशः श्री एम. एल. मेहता, प्रो. रमेशजी अरोड़ा, डॉ. पी. डी. शर्मा, डॉ. प्रेमचन्दजी रावका, डॉ. निरंजनलालजी मिश्र एवं श्री तेजकरणजी डंडिया ने बालकों को नैतिक एवं धार्मिक शिक्षा देकर अपने व्यक्तित्व का विकास करने की प्रेरणा दी।

अन्तिम दिन समापन समारोह की अध्यक्षता शिक्षाविद् माननीय श्री तेजकरणजी डंडिया ने की। कार्यक्रम में प्रथम, द्वितीय व तृतीय स्थान प्राप्त छात्रों के साथ सभी बच्चों को पुरस्कृत किया गया।

अन्त में शिविर प्रभारी श्रीमती रमा जैन ने शिविर की उपलब्धियों पर प्रकाश डाला।

एक अल्पसंख्यक जैन संस्थान

भगवान महावीर स्वामी के 2600 वें जन्मोत्सव के शुभ अवसर पर वर्ष 2001 में मुरादाबाद में **तीर्थंकर महावीर इन्स्टीट्यूट** की स्थापना की गयी थी। संस्थान ए. आई. सी. टी. ई नई दिल्ली से अनुमोदित एवं यू. पी. टैक्नीकल यूनिवर्सिटी लखनऊ तथा रूहेलखण्ड विश्वविद्यालय बरेली से संबद्ध है। संस्थान में 50 प्रतिशत जैन समुदाय के छात्रों को उपलब्ध हो सकेगा। जैन समुदाय के छात्रों को सुनिश्चित प्रवेश उपलब्ध कराने हेतु संस्थान समिति द्वारा विभिन्न पाठ्यक्रमों में नियत स्थान विभिन्न जैन शिक्षण संस्थानों को प्रदान करने का निर्णय लिया गया है। विभिन्न जैन संस्थानों द्वारा सन्सतुतित (Recommended) छात्रों को टी. एम. आई. एम. टी. मुरादाबाद में बिना किसी प्रवेश परीक्षा के प्रवेश उपलब्ध कराया जायेगा।

इस संस्थान में 2 वर्षीय एम. बी. ए., 3 वर्षीय एम. सी. ए., 1 वर्षीय पी. जी., डी. सी. ए, 3 वर्षीय बी. बी. ए., 3 वर्षीय बी. सी. ए तथा 3 वर्षीय बी. एस. सी. (होम साइन्स, बॉयो टैक्नोलॉजी, फैशन डिजाइनिंग एण्ड इन्फरमेशन टैक्नालॉजी), 1 वर्षीय बी.एड, 5 वर्षीय एल. एल. बी. के पाठ्यक्रम उपलब्ध हैं। इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी के लिये निम्न पते पर सम्पर्क करें।

तीर्थंकर महावीर इन्स्टीट्यूट, दिल्ली रोड, मुरादाबाद-1 (उ.प्र.)
फोन नं. (0591) 2487111, फैक्स : 91-591-484244
E-mail : tmimtmbd @ sancharnet.in

– चेयरमेन, सुरेशचन्द जैन

शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखरजी की यात्रा

पूज्यश्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के तत्त्वावधान में सन् 1995 में श्री कान्तीभाई मोटाणी परिवार की तरफ से खास ट्रेन द्वारा शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखरजी की यात्रा का अविस्मरणीय आयोजन किया गया था। उसके बाद सन् 1998 में सोनगढ़ एवं सौराष्ट्र गुजरात के जिन मंदिरों की दर्शन यात्रा का आयोजन किया गया था।

समय समय पर समाज की ओर से शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखरजी यात्रा के आयोजन हेतु मांग आती रही है। जिसे देखकर पूज्यश्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली की तरफ से आगामी दिसम्बर 2003 में दिनांक 15 से दिनांक 30 के बीच 10/11 दिन की शाश्वत तीर्थधाम सम्मेदशिखरजी की यात्रा के आयोजन का विचार किया है। जिसमें 4 दिन शिखरजी में शिक्षण शिविर, 1 दिन यात्रा, 1 दिन पावापुरी यात्रा, एक दिन चम्पापुरी एवं 3/4 दिन प्रवास कुल मिलाकर 10 या 11 दिन की यात्रा का सम्पूर्ण खर्च लगभग 2800 के आसपास होगा।

इस यात्रा में विद्वान पण्डित डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, पण्डित उत्तमचन्दजी जैन सिवनी एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री छिंदवाड़ा आदि विद्वान तो रहेंगे ही और भी अन्य विद्वतगण पधारेंगे। जिनके प्रवचन एवं तत्त्वचर्चा का लाभ प्राप्त होगा।

कृपया ध्यान दें कि 60 वर्ष से बड़े व्यक्ति के साथ एक युवा सदस्य साथ में होना आवश्यक रहेगा। यदि आप इस यात्रा में सम्मिलित होना चाहतें हैं तो निम्न पते पर अपना नाम, उम्र एवं पता शीघ्र दिनांक 31-8-2003 के पूर्व भेजें।

आवश्यक संख्या होगी तो सुव्यवस्थित आयोजन के साथ गुरुप्रसाद में - पत्र द्वारा संपूर्ण विगतवार कार्यक्रम तारीख-समय-यात्रा-स्थल एवं विशेष सूचना दी जायेगी।

सम्पर्क : यात्रा प्रवास यात्रा कमेटी
पूज्यश्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट
173-175 मुम्बादेवी रोड, मुंबई - 400002
फोन नं. : 23425241- 23446099, फेक्स : 23414024
E-mail : kanti @ deltalens.com

बाल संस्कार शिविर सानन्द सम्पन्न

खण्डवा (म.प्र.) : स्व. श्रीमती अनीता जैन धर्मपत्नी श्री कल्याणमलजी की स्मृति में दिनांक 10 जून से 16 जून 2003 तक द्वितीय जैन बाल संस्कार शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर प्रवचनों एवं कक्षाओं के माध्यम से पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, डॉ. कपूरचंदजी कौशल भोपाल, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री बांसवाड़ा, पण्डित रीतेशजी शास्त्री सनावद, पण्डित प्रयंककुमारजी शास्त्री रहली एवं श्रीमती ममता जैन बांसवाड़ा का लाभ समाज को मिला।

सभी कार्यक्रम ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद के कुशल निर्देशन में सम्पन्न हुये।

चल शिक्षण शिविर सानन्द सम्पन्न

आचार्य कुन्दकुन्द नैतिक शिक्षा समिति द्वारा आयोजित चल शिक्षण शिविर के अन्तर्गत 15 जून से 21 जून 2003 तक ❋ **करहल** में पण्डित अनुरागजी जैन फिरोजाबाद द्वारा प्रवचन एवं कुमारी प्रीति जैन द्वारा बाल कक्षायें ❋ **जैन नगर खेड़ा** में पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर एवं नवनीत पोद्दार द्वारा प्रवचन व कक्षायें तथा ❋ **कायमगंज** में पण्डित अश्विनकुमारजी शास्त्री नौगामा द्वारा प्रवचन एवं कक्षाओं का आयोजन किया गया।

रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। शिविर में सैकडों बालक-बालिकाओं एवं मुमुक्षों ने लाभ लिया।

इन्हीं चल शिक्षण शिविरों के अन्तर्गत 22 जून से 28 जून 2003 तक ❋ **भोगांव (मैनपुरी)** में पण्डित परेशकुमारजी बड़ौदिया द्वारा प्रवचन, कक्षायें ❋ **हनुमानगंज (फिरोजाबाद)** में पण्डित सौरभकुमारजी शास्त्री, पण्डित अनुरागजी एवं पण्डित अरहंतवीर द्वारा प्रवचन एवं कक्षायें ❋ **रसूलपुर (फिरोजाबाद)** में पण्डित अभिनयकुमारजी जबलपुर एवं पण्डित आदित्यजी खुरई द्वारा प्रवचन एवं कक्षायें तथा ❋ **आमनगर (फिरोजाबाद)** में पण्डित अनन्तवीर जैन फिरोजाबाद एवं पण्डित अश्विन शास्त्री नौगामा द्वारा प्रवचन एवं कक्षाओं का आयोजन किया गया।

रात्रि में लगभग सभी स्थानों पर सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये। सम्पूर्ण आयोजन में सैकड़ों बालक-बालिकाओं एवं मुमुक्षों ने लाभ लिया।

जैनदर्शन एवं व्यक्तित्व विकास शिविर सम्पन्न

कोटा (राज.) : श्री दिगम्बर जैन बाल विकास पारमार्थिक न्यास द्वारा दिनांक 21 से 29 जून 2003 तक ग्यारहवाँ जैनदर्शन एवं व्यक्तित्व विकास शिविर आयोजन किया गया।

शिविर में शिशु, बाल, किशोर एवं प्रौढ़ वर्ग की अलग-अलग कक्षायें आयोजित की गई; जिसमें लगभग 700 शिक्षणार्थियों ने जिनेन्द्र पूजन का व्यावहारिक प्रशिक्षण एवं जैनदर्शन के आधारभूत सिद्धान्तों का ज्ञान प्राप्त किया।

इस अवसर पर आदरणीय बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के प्रवचनसार की गाथा 90 एवं नियमसार की 38 वीं गाथा पर तत्त्वचर्चा हुई। साथ ही पण्डित शैलेषभाई तलोद, पण्डित बाबूभाई मेहता फतेहपुर, के प्रवचनों का लाभ समाज को मिला। इसके अतिरिक्त पण्डित कस्तूरचन्दजी विदिशा, पण्डित अजितकुमारजी शास्त्री अलवर, पण्डित अशोककुमारजी शास्त्री रायपुर, पण्डित मनीषकुमारजी शास्त्री खड़ैरी, पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित प्रदीपजी शास्त्री इत्यादि शिक्षकों ने कक्षायें ली।

दिनांक 28 जून को परीक्षा आयोजित की गई। तथा 29 जून को समापन समारोह के अवसर पर प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त विद्यार्थियों को बाबू जुगलकिशोरजी की अध्यक्षता में पुरस्कृत किया गया।

– डॉ. मानमल जैन, मंत्री

– डॉ॰ हुकमचन्द भारिल्ल

अब इसी का हिन्दी अनुवाद भी कहते हैं –

(अडिल्ल)

सब ही अध्यवसान त्यागने योग्य हैं,
यह जो बात विशेष जिनेश्वर ने कही।
इसका तो स्पष्ट अर्थ यह जानिये,
अन्याश्रित व्यवहार त्यागने योग्य हैं।
परमशुद्धनिश्चयनय का जो ज्ञेय है,
शुद्ध निजातमराम एक ही ध्येय है।
यदि ऐसी है बात तो मुनिजन क्यों नहीं,
शुद्धज्ञानघन आतम में निश्चल रहें।।173।।

सब ही प्रकार के अध्यवसान भाव त्यागने योग्य हैं, भगवान ने जो यह बात कही है, उसका अर्थ यह है कि अन्याश्रित व्यवहार से होनेवाले जितने भी अध्यवसान हैं, वे सब त्यागने योग्य हैं तथा परमशुद्ध–निश्चयनय का ज्ञेय त्रिकाली ध्रुव भगवान आत्मा ही ध्यान करने योग्य है।

शिष्य कहता है कि यदि सारा व्यवहार ही त्यागने योग्य है और निश्चयनय ग्रहण करने योग्य है तो मेरी समझ में यह नहीं आता है कि मुनिजन अपने भगवान आत्मा में निश्चल क्यों नहीं रहते हैं ? मुनिराजों का उपयोग बाहर क्यों भटकता है ?

जिन मुनिराजों का उपयोग अपने शिष्यों को आत्मा की बात समझाने में भटकता है, 32 अन्तराय और 46 दोष टालकर के शुद्ध आहार लेने जाने में जाता है; उन मुनिराजों से कह रहे हैं कि जब यह बात निश्चित है तो तुम्हारा उपयोग वहाँ क्यों जाता है ? तुम अपनी आत्मा में लीन क्यों नहीं रहते हो ?

जब मुनिराजों के बारे में यह कहा जाता है तो जिनका उपयोग सारे जगत में डोलता है, उन ग्रहस्थों का क्या होगा ? इसपर अमृतचन्द्राचार्यजी कहते हैं कि उनके बारे में सोचने के लिए हमारे पास समय नहीं है।

आगे 174 वें कलश के पद्यानुवाद में कहते हैं कि –

(सोरठा)

कहे जिनागम माँहि शुद्धातम से भिन्न जो।
रागादिक परिणाम कर्मबंध के हेतु वे।।
यहाँ प्रश्न अब एक उन रागादिक भाव का।
यह आतम या अन्य कौन हेतु है अब कहैं।।174।।

जो अपने शुद्धात्मा से भिन्न रागादि परिणाम हैं; वे आत्मा के बंध के हेतु हैं, पर पदार्थ बंध के हेतु नहीं हैं।

जो डाकू जेल की नौ फीट चौड़ी सीमेन्ट की बनी 20 फीट ऊँची दीवार को तोड़कर भाग जाता है; वही डाकू अपने घर की प्लाई की दीवार नहीं तोड़ पाता है।

जिससे द्वेष होता है, जिसको पराई समझते हैं; उसे तो तोड़ा जा सकता है और जिससे राग हो, जिसे अपनी समझते हो, वह प्लाई की दीवार भी नहीं टूटती।

उसीप्रकार हमने इस कर्म को अपना माना, तो कर्म की दीवारें कैसे टूटेगी, कर्मों का नाश कैसे करेगा ?

बंधन कौन–सा बड़ा है ? दीवालों का या राग का। राग का बंधन हो तो प्लाई की दीवार में भी बंद रह सकता है और राग का बंधन नहीं हो तो जेल की दीवार भी तोड़कर बाहर निकल सकता है। जेल की दीवाल से भागे और पच्चीस पुलिस वाले पीछे दौड़े, तो भी पकड़ नहीं पाए और पकड़ भी ले तो, छूटकर भाग जाए; लेकिन यदि दो वर्ष का बच्चा रोए तो लौट के आयेगा। लौटकर आने पर भी जबतक वह बच्चा जाने के लिए हाँ न कर दे, तबतक बड़े से बड़ा डाकू भी भाग नहीं सकता।

यदि भाग भी जाय और 1 हजार मील चला जाय तो बच्चे को देखने लिए हजार मील से दौड़ा चला आयेगा।

अरे भाई ! राग का बंधन मजबूत बंधन है, दीवालों का बंधन तो बंधन ही नहीं है।

कोई कहे कि जब पर से कुछ होता ही नहीं है तो पर के संग का निषेध क्यों करते हो ? उसके उत्तर में 175 वाँ कलश कहते हैं, जिसका पद्यानुवाद इसप्रकार है –

(दोहा)

अग्निरूप न होय सूर्यकान्तमणि सूर्य बिन।
रागरूप न होय यह आतम परसंग बिन।।175।।

सूर्यकान्त नाम की एक मणि होती है, उस पर यदि सूर्य की किरणें पड़े तो वह एकदम जलने लगती है। चन्द्रकान्त नाम की भी एक मणि होती है, उस पर यदि चन्द्रमा की किरणें पड़े तो पानी झरने लगता है।

जैसे सूर्यकान्त मणि में आगरूप होने की ताकत स्वयं की है; लेकिन सूर्य की किरणें पड़ना चाहिए – यह एक नियम है।

इसीप्रकार आत्मा में रागरूप परिणमन की शक्ति स्वयं की है, लेकिन उसका लक्ष्य पर होना चाहिए। परसंग बिन वह रागरूप परिणमित नहीं हो सकता है। राग भी किसी न किसी से होता है; चाहे वह स्त्री से, पुत्र से, मकान से, जायदाद से, रुपए से, पैसे से, देव से, शास्त्र से, गुरु से क्यों ही न हो; वह किसी न किसी के लक्ष्य से ही होता है।

इसप्रकार के वस्तुस्वरूप को ज्ञानी जीव जानते हैं; इसलिए वे रागादि के कर्ता नहीं हैं और अज्ञानी नहीं जानता; इसलिए वह इन रागादिभावों का कर्ता होता है – इसी भाव को स्पष्ट करनेवाले कलश 176 का पद्यानुवाद इसप्रकार है –

(दोहा)

ऐसे वस्तुस्वभाव को जाने विज्ञ सदीव।
अपनापन ना राग में अतः अकारक जीव।।176।।
ऐसे वस्तुस्वभाव को ना जाने अल्पज्ञ।

धरे एकता राग में नहीं अकारक अज्ञ।।177।।

यही वस्तु का स्वरूप है, बंध अधिकार का सार भी यही है कि परसंग से तेरे अन्दर में उत्पन्न जो रागादि हैं, वे बंध के कारण हैं, अन्य कुछ भी नहीं। ज्ञानी इस बात को जानते हैं; इसलिए वे अकर्ता हैं, निर्बंध हैं; और अज्ञानी इस बात को नहीं जानते; इसलिए वे रागादि भावों के कर्ता हैं और बंधन को प्राप्त होते हैं।

इक्कीसवाँ प्रवचन

समयसार परमागम की चर्चा चल रही है, जिसमें जीवाजीवाधिकार से बंध अधिकार तक की चर्चा हो चुकी है।

अपने त्रिकालीध्रुव भगवान आत्मा को छोड़कर जितने भी पर पदार्थ हैं, पर पदार्थ के लक्ष्य से उत्पन्न होनेवाले रागादिभाव हैं; वे सब मैं नहीं हूँ; वे सब मेरे नहीं हैं और मैं इनका कर्ता–भोक्ता भी नहीं हूँ – यह बात जीवाजीवाधिकार और कर्ताकर्म अधिकार में विस्तार से बताई है।

फिर पुण्य–पाप अधिकार में यह बताया कि पाप के समान पुण्य भी हेय ही है; क्योंकि वह बंध का कारण है, मुक्ति का कारण नहीं है।

आस्रव अधिकार में यह बताया कि पुण्य और पाप के भाव आस्रवभाव हैं, आत्मा नहीं। ये दोनों भाव आस्रवभाव होने से बंधरूप हैं, बंध के कारण हैं, हेय है और भगवान आत्मा उन आस्रवभावों से भिन्न है। जिन सम्यग्दृष्टि धर्मात्माओं ने भगवान आत्मा का अनुभव कर लिया है, उनके भोगों का संयोग रहने पर भी बंध नहीं होता है।

संवर अधिकार में इसप्रकार भेदविज्ञान का अभिनन्दन किया कि भेदविज्ञान से ही मुक्ति की प्राप्ति होती है। आज तक जितने जीव सिद्धदशा को प्राप्त हुए हैं, वे सब भेदविज्ञान के बल से ही हुए हैं और आज तक जो भटक रहे हैं; वे सब भेदविज्ञान के अभाव से ही भटक रहे हैं।

फिर बंध अधिकार में यह बताया कि न तो कार्माण वर्गणा से ही जीव बंधा है; न ही मन, वचन, काय की चंचलता से जीव बंधा है तथा न जीवों के मरने–मारने से ही जीव बंधा है तथा पाँच इन्द्रियों के भोगों के कारण भी जीव नहीं बंधा है। यदि बंधन का कोई कारण है, तो वह एकमात्र मिथ्यात्व सहित कषाय भाव ही है।

अब मोक्ष अधिकार प्रारंभ होता है। हमें मुक्त होना है, इसलिए हम सब मुमुक्षु कहलाते हैं। जिन्हें मोक्ष की इच्छा है और कोई इच्छा नहीं है, वे सभी मुमुक्षु हैं।

मोक्ष अधिकार में मुक्ति की प्राप्ति कैसे होती है, इसकी चर्चा की गई है।

मोक्षाधिकार की आरंभ की ये गाथाएँ बहुत ही मार्मिक हैं–

जह णाम को वि पुरिसो बंधणयम्हि चिरकालपडिबद्धो।
तिव्वं मंदसहावं कालं च वियाणदे तस्स।।288।।
जइ ण वि कुणदिच्छेदं ण मुच्चदे तेण बंधणवसो सं।
कालेण उ बहुगेण वि ण सो णरो पावदि विमोक्खं।।289।।
इय कम्मबंधणाणं एदेसठिइ पयडिमेवमणुभागं।
जाणंतो वि ण मुच्चदि मुच्चदि सो चेव जदि सुद्धो।।290।।

जिसप्रकार बहुत काल से बंधन में बंधा हुआ कोई पुरुष बंधन के तीव्र–मन्दस्वभाव को, उसकी कालावधि को तो जानता है; किन्तु उस बंधन को काटता नहीं है तो वह उससे मुक्त नहीं होता तथा बंधन में रहता हुआ वह पुरुष बहुत काल में भी बंधन से छूटनेरूप मुक्ति को प्राप्त नहीं करता।

उसीप्रकार यह आत्मा कर्मबंधनों के प्रकृति, प्रदेश, स्थिति और अनुभाग को जानता हुआ भी कर्मबंधन से नहीं छूटता; किन्तु यदि रागादि को दूरकर वह स्वयं शुद्ध होता है तो कर्म–बंधन से छूट जाता हैं

जिसप्रकार किसी को रस्सियों से जकड़ कर बांध दिया गया हो तथा वह सोचे कि मैं रस्सियों से जकड़ कर बंधा हूँ, यह रस्सी बहुत मजबूत है, यह रस्सी इस तरह से बनाई है, इस व्यक्ति ने मुझे बंधन में डाला है, तो क्या इन सबका विचार करते रहने से वह बंधन से मुक्त होगा ? कभी नहीं।

विचार करते रहने से लोक में जिसप्रकार जीव बंधन से मुक्त नहीं होता है; उसीप्रकार बंधन की प्रक्रिया के विस्तार में जाने से और उसका विचार करते रहने से वह मुक्ति को प्राप्त नहीं होगा।

ये तीन गाथाएँ और इसके बाद की तीन गाथाएँ, इसप्रकार आरंभ की छह गाथाओं में यही बताया गया है। इसमें दो बिन्दु हैं। एक तो बंधन के ज्ञान से और दूसरा बंधन के चिंतन से बंधन से मुक्ति नहीं होती है।

ये दोनों बिन्दु यद्यपि एक से हैं – ऐसा लगता है, लेकिन दोनों में बहुत अंतर है।

किसी वस्तु को जानना जानना है और उसी के बारे में लगातार जानते रहना, सोचते रहना चिन्तन है।

देखो ! भगवान की भक्ति करते रहने से मुक्ति नहीं होगी, दया दान से मुक्ति नहीं होगी, क्रियाकाण्ड से मुक्ति नहीं होगी यह सब तो विस्तार से पीछे कह आए हैं। यहाँ तो यह कहा जा रहा है कि बंधन को जानने या उसके चिन्तन से भी मुक्ति की प्राप्ति नहीं होगी।

क्रियाकाण्ड से ना मिले यह आतम अभिराम।
ज्ञानकाण्ड से सहज ही सुलभ आतमाराम।।

यह आत्मा क्रियाकाण्ड से नहीं मिलेगा, तीर्थयात्रा से भी नहीं मिलेगा, जप–तप से नहीं मिलेगा, पूजा–पाठ से नहीं मिलेगा, दया–दान से भी नहीं मिलेगा; क्योंकि यह ज्ञान का मार्ग है।

यह भावुकता का रास्ता नहीं है, रोने–धोने का रास्ता नहीं है, दया की भीख माँगने का भी रास्ता नहीं है। यह तो भेद–विज्ञान का रास्ता है, पर से भिन्न निज आत्मा के अनुभव का रास्ता है, आत्मज्ञान का रास्ता है, आत्मा के ध्यान का रास्ता है। (क्रमशः)

रजिस्ट्रेशन आर. एन. आई. 31109/77

चारित्रचक्रवर्ती आचार्य 108 श्री शांतिसागरजी की 131 वीं जयन्ती 'संयम वर्ष' के रूप में मनायें –

– आचार्य श्री विद्यानन्दजी मुनिराज

दिल्ली, 22 जून। आचार्य श्री विद्यानन्दजी ने चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागरजी की 131 वीं जन्मजयन्ती **संयम वर्ष** के रूप में मनाने का आह्वान किया। आचार्य श्री आज ग्रीनपार्क जैन मंदिर में दिल्ली जैनसमाज के विभिन्न मंदिरों के पदाधिकारियों एवं कार्यकर्ताओं को संबोधित कर रहे थे। इस अवसर पर आपने जैनसमाज की एकता बनाये रखने के लिए मत ठुकराओ, गले लगाओ, धर्म सिखाओ का मूल मंत्र दिया और आचार्य श्री शांतिसागरजी की 131 वीं जन्मजयन्ती 19 जुलाई 2003 से 8 जुलाई 2004 तक उत्साहपूर्वक मनाने की प्रेरणा दी।

इस अवसर पर श्री चक्रेश जैन (बिजली वाले) ने चारित्र चक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागरजी के उपकारों की चर्चा करते हुए उन्हें इस शताब्दी का महान संत निरूपित किया। साथ ही आपने मूलाचार के प्रचार-प्रसार की बात भी कही।

डॉ. सत्यप्रकाशजी जैन दिल्ली ने आचार्य श्री शांतिसागरजी के जीवन के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हुए कहा कि पूज्य आचार्य श्री ने दक्षिण को उत्तर से जोड़ने की परम्परा प्रारंभ की जिसे भुलाया नहीं जा सकता।

साहू रमेशचन्द जैन, दिल्ली ने इस कार्यक्रम के प्रणेता आचार्य श्री विद्यानन्दजी द्वारा समय-समय पर मार्गदर्शन देकर समाज को जगाये रखने के लिए उनका अनन्त उपकार माना। आपने समाज में आई हुई विकृतियों का उल्लेख करते हुए उन्हें समय का प्रभाव निरूपित किया और संयम वर्ष मनाने में अपना पूर्ण सहयोग देने का वचन दिया।

श्री नरेशकुमारजी सेठी, जयपुर ने साधुओं में आये शिथिलाचार के लिए श्रावकों को भी दोषी ठहराया।

डॉ. त्रिलोकचन्द कोठारी, कोटा ने आचार्य श्री के जीवन से प्रेरणा लेने एवं समाज को एकता के सूत्र में बांधने के प्रयासों की सफलता की कामना की।

श्री निर्मलकुमार सेठी, लखनऊ ने आचार्य श्री विद्यानन्दजी द्वारा संयम वर्ष मनाने के निर्णय को सूझ-बूझ भरा कदम बताया और कहा कि समाज की एकता में ही दिगम्बर परम्परा निहित है। हमें एक होकर आगे बढ़ना चाहिए और सकारात्मक ढ़ंग से इस कार्यक्रम को पूरी शक्ति से मनाना चाहिए।

कार्यक्रम में श्री राकेश जैन जनकपुरी, श्री जीवेन्द्र जैन गाजियाबाद, श्री अतरसेन जैन चाहरहट, श्री हरिशचंद जैन पालम, श्री विजय लुहाड़िया वैद्यवाड़ा, श्री अखिल बंसल सम्पादक समन्वय वाणी जयपुर ने भी अपने विचार व्यक्त किये। श्री मुनीश्वर प्रसाद जैन ग्रीनपार्क ने धन्यवाद ज्ञापित किया। सतीश जैन आकाशवाणी ने कार्यक्रम का सफल संचालन किया।

– सतीश जैन, संयोजक

अगस्त माह में आनेवाली 24 तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों की तिथियाँ एवं पर्व

3 अगस्त	–	भगवान नेमिनाथ का जन्मकल्याणक एवं तप कल्याणक
4 अगस्त	–	भगवान पार्श्वनाथ का मोक्षकल्याणक
12 अगस्त	–	भगवान श्रेयांसनाथ का मोक्षकल्याणक एवं रक्षा बन्धन
13 अगस्त	–	सोलहकारण व्रत प्रारंभ
19 अगस्त	–	भगवान शान्तिनाथ का गर्भकल्याणक
31 अगस्त	–	दशलक्षण पर्व प्रारंभ

छात्र-वृत्तियाँ – 2003-04

मान्यताप्राप्त स्कूलों/ कॉलेजों/ प्रशिक्षण संस्थानों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के लिये नॉन-रिफंडेबिल (वापिस न होनेवाली) छात्र-वृत्तियाँ तथा इन्जीनियरिंग, मेडिकल, बिजनस-मैनेजमैंट, जैनदर्शन अनुसंधान आदि पाठ्यक्रमों में उच्च शिक्षा के लिए ऋण के आधार पर रिफंडेबिल (वापिस होनेवाली) छात्रवृत्तियाँ योग्यता तथा कमजोर आर्थिक स्थिति के आधार पर उपलब्ध है।

निर्धारित आवेदन-पत्र एक लिफाफे (24ह्व10 सें.मी.) पर अपना पता और पाँच रुपये का डाक टिकट लगाकर भेजने से प्राप्त हो सकता है। पूरे विवरण सहित आवेदन-पत्र कार्यालय में पहुँचने की अंतिम तिथि : 31 अगस्त 2003 है।

– मंत्री (छात्रवृत्ति)

जैन सोशल वैलफेयर एसोसिएशन,

एच-22, ग्रीन पार्क एक्सटैन्शन, नई दिल्ली-110016

जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) जुलाई (द्वितीय) 2003
J.P.C. 3779/**02/2003-05**

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा जयपुर**, डबल एम.ए. (जैनविद्या एवं तुलनात्मक धर्मदर्शन) तथा इतिहास
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., एम. आई. रोड, जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, ए-4, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो कृपया निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर – 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
तार : त्रिमूर्ति, जयपुर **फैक्स :** 2704127